बस्तर चो सुँदर माटी

(हल्बी बाल गीत-संग्रह)

शकुंतला तरार

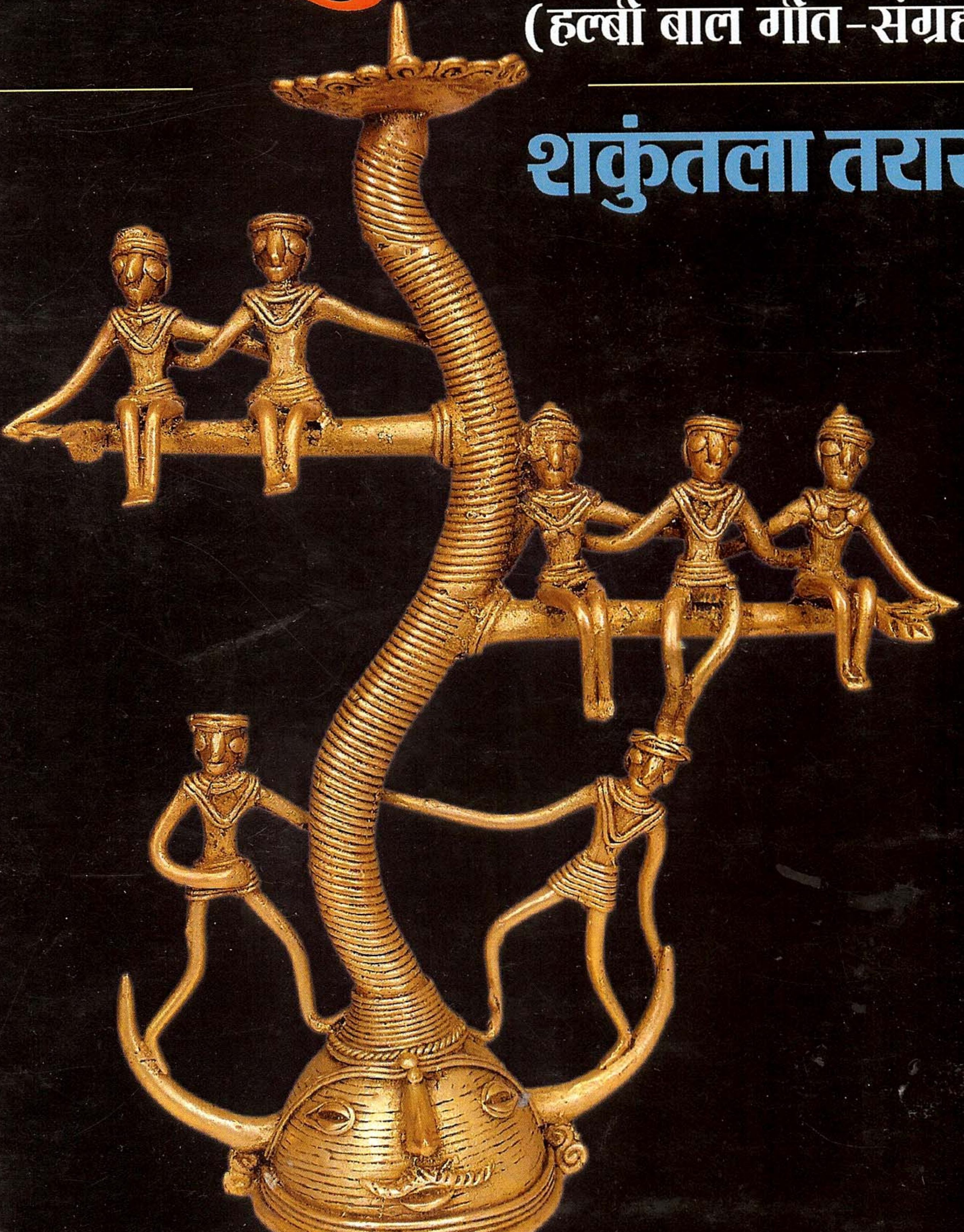

1

बस्तर चो सुँदर माटी

(हल्बी बाल गीत-संग्रह)

शकुंतला तरार

●

वैभव प्रकाशन

रायपुर (छ.ग.)

बस्तर चो सुँदर माटी

(हल्बी बाल गीत-संग्रह)

•

प्रकाशक

वैभव प्रकाशन

अमीनपारा चौक, पुरानी बस्ती रायपुर (छत्तीसगढ़)

दूरभाष : 0771-4038958, मो. 94253-58748

e-mail : sahityavaibhav@gmail.com

www.vaibhavprakashan.com

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : 50.00 रुपये

कॉपी राइट : लेखकाधीन

टाईप सेटिंग : संदीप तरार

मो. 95890-52209

संयोजन: श्वेता तरार

•

Published by

Vaibhav Prakashan

Amin Para, Purani Basti

Raipur, Chhattisgarh (India)

First Edition : 2016

Price: Rs.50.00

मचो गोठ-

हुन नानी-नानी पीला-झीला लोलो-बालो मन काजे जे एभय-एभय इसकुल जाऊन पढुक लिखुक सीखलासत मचो बाटले गोटोक मया चो चिन्हा आय ए पीला गीद।

शकुंतला तरार

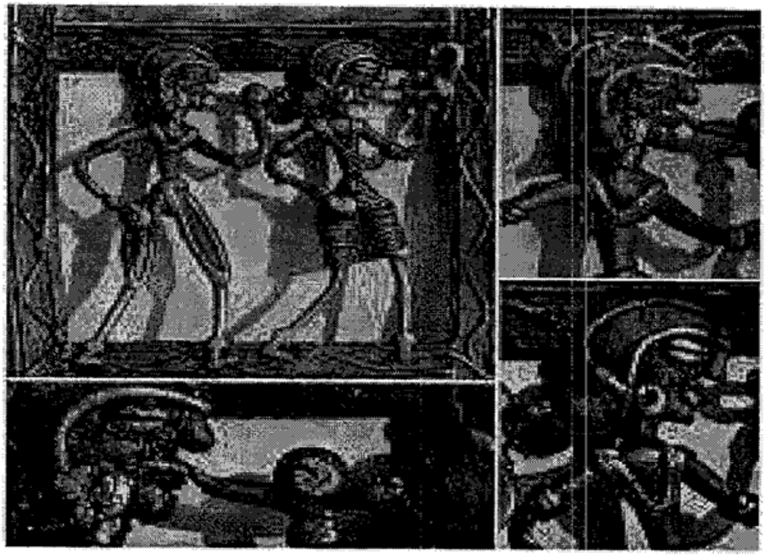

अनुक्रमणिका

1.	सोनई रूपई	7
2.	नवा अगास	8
3.	ओंडार	9
4.	आया मयं दीया बनेंदे	10
5.	नंदी	11
6.	आया	13
7.	चतुर कोयली	14
8.	मंडई हाट	15
9.	उरूला उरूला सेमी तुरूला	16
10.	बस्तर चो सुँदर माटी	17
11.	कुकड़ा बासली	19
12.	बिहान पाहाली	20
13.	चटेया इली	21
14.	डाहा	22
15.	जोनी दादा	23
16.	पिरथी	24
17.	पानी	25
18.	भँवरा	26
19.	हाती	27
20.	किसान	28

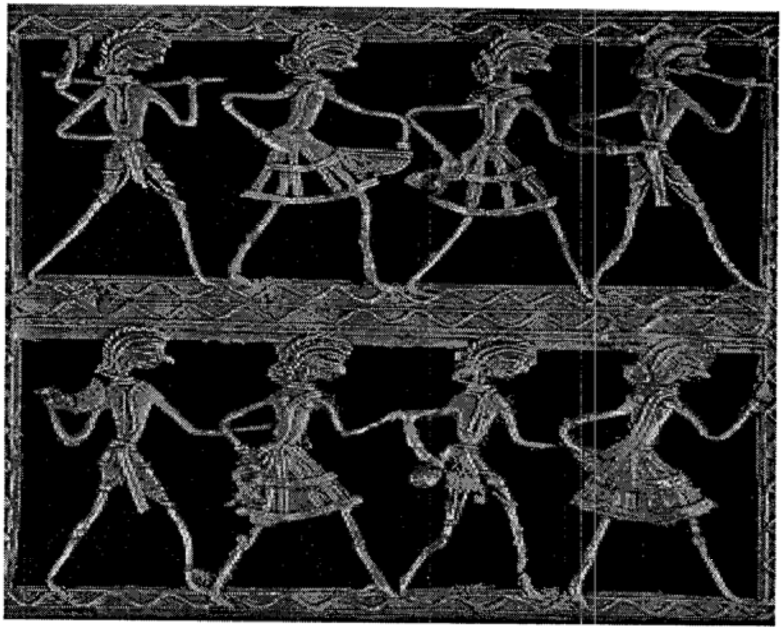

सोनई रूपई

सोनई रूपई दूय बईन
दूनों खाओत डांडा तीन

सोनई के भाये लाड़ू खाजा
रूपई के भाये सोरा साजा

दूनो जाओत खमन रान
हुता टोड़त दतुन पान

जेभे लागो घाम चो झांज
बोहडून एओत होले सांज

दूनो जाओत घोटुल सार
गीतकुरिन होला हुसियार

सीखला जीवना जीवतो ढंग
दखुन जमाय होला दंग

■■

नवा अगास

आमा खायेंदे अमली खायेंदे आरू खायेंदे कुरलू
दादा आरू खायेंदे कुरलू
ठगदे हामके चेतुं मीठ-मीठ गोठ ने नी भुरलूं
लेजा रे होय दादा गोठ ने नी भुरलूँ।

घाम दिन चो करा-पानी खुबे भायेसे
जोनी उजर ने चईत परब नोनी गायेसे।

ठिरली आमा-ठिरली आमा टिरका लागली
बन-रान ने फुलली गिरल खूबे भावली।

पेज-पसया खाऊन नंगत मिहनत करेंदे
डेना-पटकी खोलुन नवा अगास उड़ेंदे।

■■

ओंडार

फूल–फूल ने बसून–बसून
रस के चुहकुन नएसे
डेंग रूख ने गुड़ा बनाउन
मंदरस जुहाउन जाएसे
ए कोन आय
एके बलसत ओंडार माछी

फुलबाड़ी के डगराउन
मिहनत खूबे करेसे
भिरलाउन देउँसे लोकटी काजे
गुड़ा के नसाउन पकाउँसे
ए कोन आय
एके बलसत ओंडार माछी

नंगत रले नंगत, नसाले
अपटी कचाड़ी करेसे
संगे संगे मिसुन रतो
आमके सिखाउन जायेसे
ए कोन आय
एके बलसत ओंडार माछी

आया मयं दीया बनेंदे

ए आया मचो मयं दीया बनेंदे

गियान चो दीया आरू बिज्ञान चो दीया
सत चो दीया आरू बिद्या चो दीया
मयं करेंदे उजर सबचो कुड़िया के
आरू दयेंदे जमाय मनुख के शिक्षा चो दान
ए आया मचो मयं दीया बनेंदे

बनेंदे सब चो बुद्धि चो राजा आरू
निसकायेंदे मन चो अंधियार
किताब पढ़ायेंदे लिखुक सिखायेंदे
बनायेंदे लोक के हुसियार
ए आया मचो मयं दीया बनेंदे

■■

नंदी

झिरमुर–झिरमुर कोन नंदी बोहेसे
कोन नंदी बोहेसे
इंदराबती बोहे निराझर
दादा लेहरा संगे बोहे निराझर।
झिरमुर–झिरमुर कोन नंदी बोहेसे
कोन नंदी बोहेसे
नारंगी नंदी बोहे निराझर
धनी लेहरा संगे बोहे निराझर

इतरो पानी काहाँ ले आनेसे
कोलार करून जायेसे
डेंग डोंगरी ले उतरून भाती

सबचो पियास बुतायेसे
झिरमुर झिरमुर कोन दानी इलोसे
इंदराबती इली निराझर
दादा नारंगी नंदी बोहे निराझर

डोंगरी एके जनमायेसे
समुंद कोरा धरेसे
केभे थाके थेबे नाईं
आपलो बाट ने रेंगुन जायेसे
झिरमुर झिरमुर कोन नंदी रेंगेसे
इंदराबती रेंगे निराझर
दादा नारंगी नंदी रेंगे निराझर

■■

आया

ए मचो आया आय
मया करतो बीती माय

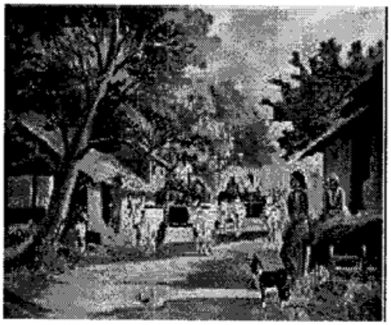

जोजोली गाउन सुताए हामके
लाड़ करून उठाऊ आय
मया करतो बीती माय

कांई अजीक डंड होले
कोरा धरून बसाउ आय
मया करतो बीती माय

आमचो हांसले हांसे हुन
गागले संगे गागू आय
मया करतो बीती माय

आमचो ऊपरे आफत इले
आपलो ऊपरे झोकून जाय
मया करतो बीती माय

■■

चतुर कोयली

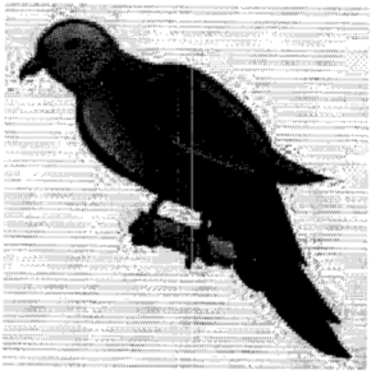

कारी कारी कोयली आय
मीठ–मीठ एचो बोली आय

डारा–डारा, पाना–पाना बसुन
कुहु–कुहु–कुहु झुमुन गायेसे

खुबे चलाक एके बलसत
कावा के ठगुन जायेसे

कावा गुड़ा ने गार पाडुन
ओगाय मिटकाउन रहेसे

कावा बिचरंगी आपलो बलुन
हुनचो गार के सेवेसे

तेबे पाछे पिला फुटले
भुर ने उडुन जायेसे
चतुर कोयली गायेसे।

■■

मंडई हाट

रँग-रँग चो जिनिस दखा
आनी-बानी चो गुड़िया खाजा

गाँव-गाँव चो मांदर ढूडरा
गुलाय राती रीलो झेला

सरगन झुलना, रांहटा झुलना
गाँव-गाँव चो छतर बाना

पीला-झीला संगे आया-बूबा
मंडई-हाटे बुलुक इला

■■

उरूला उरूला सेमी तुरूला

उरुला उरुला सेमी तुरुला आया
उरुला उरुला सेमी तुरुला
हुसियार होवसे तूय रे हांडा
इसकूल पढुक जा,
इसकूल पढुक जा तेबे

नोनी गो
इसकूल पढुक जा
सिलेट धरून बस्ता धरून
इसकूल पढुक जा
गुरुजी बलायसे,
गुरुजी बलायसे जाले
पीला गो
गुरुजी बलायसे

लिखुक सिखायदे पढुक सिखायदे
अकिल सांगेदे,
अकिल सांगेदे तेबे
दोंदो गो
अकिल सांगेदे
नोनी बाबू जमाय संगे इसकूल जाहाबे
(कुड़दुमदुम)

■■

बस्तर चो सुँदर माटी

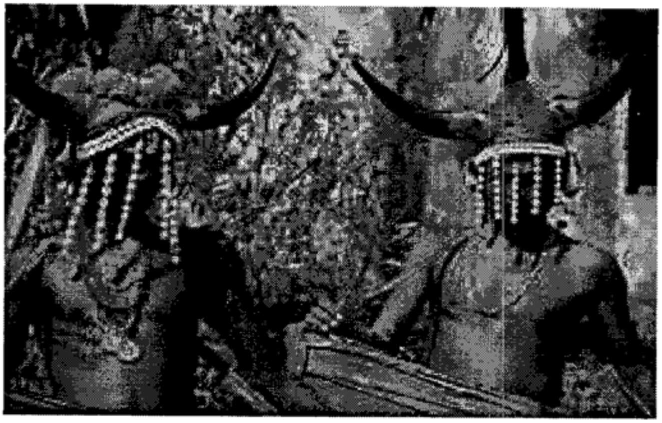

बस्तर चो सुँदर भूयं
बस्तर चो सुँदर माटी

सरग लागेसे बयलाडिला
लुआ भीतरे ऊपरे राहा ठिया
नंगत नंगत मुरिया पिला
धन–धन रे केसकाल चो घाटी
बस्तर चो सुँदर माटी

दंतेवाड़ा चो दंतेसरी
कुमडाकोटेर नवाखानी
जगदलपुर चो दसराहा
सरग आमचो कांगेर चो घाटी
बस्तर चो सुँदर माटी

अबूजमाड़ चो बीट खमन
डोंगरी पाहाड़ तूमा ढूटी
इथा आमचो सियान सजन
पिला डगराओत चेपोड़ा चाटी
बस्तर चो सुंदर माटी

लेजा, रीलो, छेरता गावा
चीखल लोंडी, भंवरा बाटी
पढ़ून लिखुन साक्षर होवा
बिन डेरी चो नी थामे पाटी
बस्तर चो सुँदर माटी

■■

कुकड़ा बासली

कोकोरेन को
कुकड़ा बासली कोकोरेन को
उठा उठा सियान सजन
पिला झिला गो
कोकोरेन को
चिड़ई उड़ला फुर्र
गाय पनाली हुर्र
लेहरा झूमे डारा पाना
आजी लिखेसे बाना गो
कोकोरेन को
जोन दादा घरे गेलोसे
बेर दादा फेर इलोसे
जमाय बलला दिन पाहाली
रात गेली बिहान होली तो
कोकोरेन को

■■

बिहान पाहाली

बिहान पाहाली बिहान पाहाली

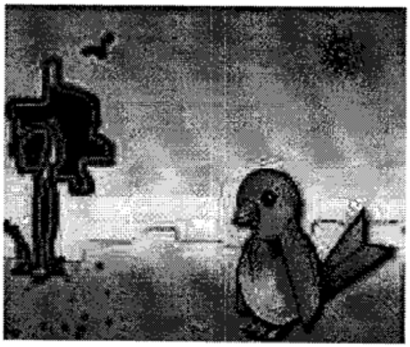

चिड़ई बलला चींव चींव
गादूर झूमला रींव रींव

ए खंदा ले हुन खंदा
ए रूख ले हुन रूख

उडुन उडुन बुलसत
हरीक होउन डगासत

मनुख दखले परासत
नंगत गीद के गावसत

हामके मया सिखावसत
संज होले फिरून जासत

■■

चटेया इली

चटेया इली चटेया इली
कुड़या भीतर ओयलली
पाठी ने गुड़ा बनाली

ए काकय डरू नुहाय
लगे गेले रहु नुहाय

गुलाय मंझने डगायेसे
संज होले सुतून जायेसे

गुड़ा ने गार पाड़ेसे
चिंया मन के पोसेसे

अयना लगे जाऊन जाऊन
टोकून टोकून रहेसे

नानी इदलो चटेया
हरीक उदीम करेसे

मके खूबे भायेसे
मके खूबे भायेसे

■■

डाहा

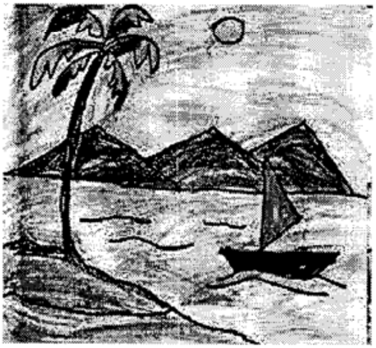

सीत गेली
सीत गेली सीत गेली
घाम चो दिन इली
दखा दखा घाम चो दिन इली

खूबे आईग फुटेदे बे
देंहे ने डाहा पकायेदे
ढोड़गी नंदी सुखून जादे
बन रान सब सूना पड़दे
रूख चो लेहरा अडराय भायेदे
रूख चो छांय गीद गायेदे
मंझन खूबे बड़े होएदे
अमली आमट सुड़पेंदे
मंडया पेज के खायेंदे
डाहाल बिकाल होयेंदे हांडा
मांतर हरीक रहेंदे

■■

जोनी दादा

जोनी दादा जोनी दादा
तुय आमचो राती चो राजा
जोनी दादा जोनी दादा

अंधार ने जेभे डर लागे
एसित तूय करून साजा
जोनी दादा जोनी दादा

अगास उपरे तूय रसित
खाले उड़ान बाजा
जोनी दादा जोनी दादा

किरका किरका होउन जासीत
दखू दखू सयगो गोला
जोनी दादा जोनी दादा

■■

पिरथी

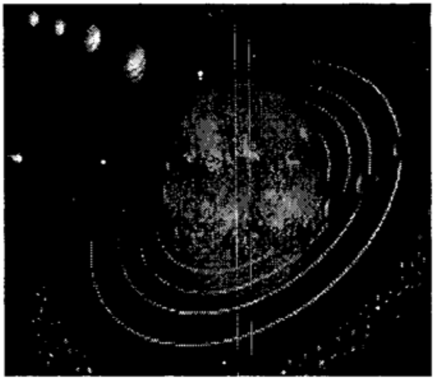

पिरथी आमचो गोल गोल
जसन रहे कुमडा गोल

गेंद जसन एचो भेस
एचो भीतरे कितरो देस

एचो आसे माहासागर
सबचो देहें चो करे आदर

आलो दुलो करेसे
सबके मया करेसे

आपलो ठान ने किंजरून भाती
राती बिहान करेसे

बुलून बुलून बरख भर ने
एऊन ठिया होएसे

महेना बारा करेसे
बरख भर किंजरेसे

■■

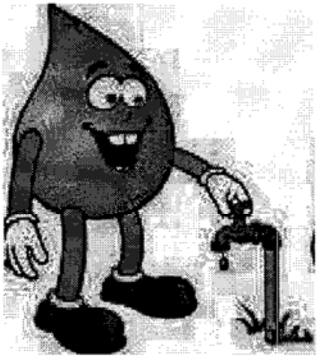

पानी

पानी आयं मयं पानी आय
सबले बड़े दानी आयं
पानी आयं मयं पानी आयं

बिन पानी चो मरना आय
पानी आमचो जीवना आय
मयं बरखेंसे बादर बनून
भूयं चो संगे मीत बदून
चुआं, डोबरी, तरई आयं
पानी आयं मयं पानी आयं
सबले बड़े दानी आयं

डेंग डोंगरी ले फुटेंसे
सबचो पियास बुतायेंसे
नंदी ढोड़गी समुंद बनेंसे
सबचो जीवना हरीक करेंसे
एई मचो कहनी आय
पानी आयं मयं पानी आयं
सबले बड़े दानी आयं

■■

भँवरा

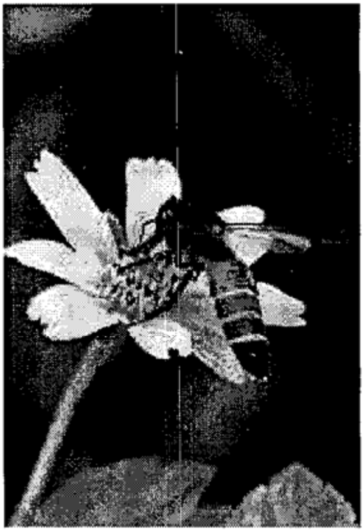

गुंनुन–गुंनुन गुंनुन–गुंनुन
भँवरा करेसे
ढूंडी–ढूंडी फूल–फूल ने
तितली बसेसे
लेहरा इले झुमुर झुमुर
बूटा हालसत
हरीक होऊन डारा–पाना
खूबे लेहरासत
झिर–मुरमुर झिर–मुरमुर
नंदी नू बोहेसे
चिड़ई चिंड़गुन बाग डूरका चो
पियास बुतेसे
राती बेरा जोन दादा
नंदी ने झांकेसे
आपलो सुंदर रूप के दखून
हरीक होएसे

■■

हाती

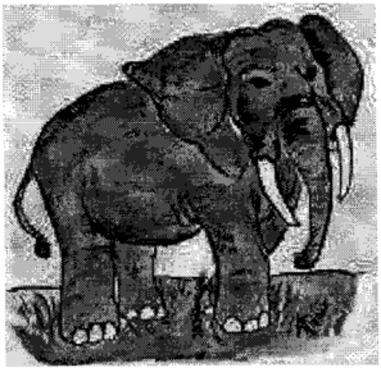

करया करया मोट-मोट
नाक ने लटके गोटोक सोंड

आईख एचो जुगुर-जागर
सूपा इदलो कान आय

झुमुन-झुमुन रेंगेसे
हालुन डोलुन रेंगेसे

हाती एचो नाँव आय
ए खमन चो सोबा आय

डारा-पाना के खाएसे
सोंड ने झिकुन टोड़ेसे

पाहाड़ इदलो दखा पड़ेसे
मनुख चो काम करेसे

तुमके कसन लागेसे
मके खूबे भाएसे ।।

■■

किसान

बड़े बिहाने
नांगर धरून बेड़ा खाड़ा ने जाये
हुसन हामचो गाँव चो किसान
अन के उबजाये ।।

धियान धरून नंगत दांय
बेड़ा ने ओल धरे
धान के बूने परहा पकाये
बियासी नांगर धरे ।।
नींदा कोड़ा करे आरू
खत पानी के दये
पोडराले धान के काटे
भारा बांधुन आने
हुसने हांडा तुमी बले खूबे पढ़ा
पढ़ते राहा पढुन भाती
नंगत हुसियार होवा

■■

नाम - शकुंतला तरार (कवयित्री, संपादक)

जन्म स्थान - तहसील पारा, जिला-कोन्डागांव बस्तर (छत्तीसगढ़)

माता - स्व. श्रीमती जमुना देवी देवांगन

पिता - स्व. श्री रतनलाल देवांगन

पति - श्री टी.सी. तरार

शिक्षा - एम.ए. (राजनीति शास्त्र), एल.एल.बी. डिप्लोमा - पत्रकारिता, उर्दू, लोकसंगीत, एम.ए. शास्त्रीय संगीत।

प्रकाशित पुस्तकें -

- 'बन कैना' छत्तीसगढ़ी गीत संग्रह
- बस्तर की लोक कथाएं
- बेटियां छत्तीसगढ़ की
- बस्तर का क्रांतिवीर गुंडाधुर - खण्ड काव्य
- टेपारी - हल्बी हाईकू एवं कविता संग्रह
- घरघुंदिया - छत्तीसगढ़ी कविता संग्रह
- मेरा अपना बस्तर - हिन्दी कविता संग्रह
- प्रफुल्ल कुमारी देवी

सम्मान -

- मिनी माता सम्मान 2001
- छत्तीसगढ़ की प्रथम देवांगन महिला साहित्यकार सम्मान
- प्रभावती सम्मान 2005 सुलभ साहित्य अकादमी दिल्ली
- वरिष्ठ कवयित्री सम्मान, वैभव प्रकाशन सम्मान, रायपुर
- सुभद्राकुमारी चौहान रजत स्मृति सम्मान 2006 हिन्दी भाषा साहित्य परिषद खगड़िया, बिहार

एवं 2017 त क अनेकों सम्मान।

विधा - हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, हल्बी में समान रूप से कहानी, कविताएं, लेख आदि का निरन्तर लेखन एवं प्रकाशन। लोक-संस्कृति में विशेष रूचि।

संपादन -

- बिहनिया (संस्कृति विभाग छ.ग. शासन)
- नारी का संबल (त्रैमासिक पत्रिका)

स्थायी पता - प्लाट नं. 32, सेक्टर-2, एकता नगर गुढ़ियारी, रायपुर (छ.ग.) पिन नं. - 492009

दूरभाष - 0771-2592194, मोबाइल - 94255 - 25681